[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 3138 HC

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : Hindi Naatak / Ekanki (हिंदी नाटक/एकांकी)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi CBCS – SEC

Semester : V

समय : 3 घंटे

पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (9×3=27)

(क) भारत के भुजबल जग रक्षित, भारत विद्या लहि जगत सिच्छित..

भारत तेज जगत बिस्तारा, भारतभय कम्पत संसारा..

जाके तिनिकहिं भौंह हिलाए, थर-थर कंपत नृप डरपाए..

जाके जय की उज्जवल गाथा, गाबत सब महि मंगल साथा..

भारत किरिन जगत ऊँजियारा, भारत जीव जियत संसारा..

भारत वेद कथा इतिहासा, भारत वेद प्रथा प्रकासा..

P.T.O.

अथवा

फूट, डाह, लोभ, भय, उपेक्षा, स्वार्थपरता, पक्षपात, हठ, शोक, अश्रुमार्जन और निर्बलता इन एक दूरजन दूती और दूतों को शत्रुओं की फौज में हिला मिलाकर ऐसा पंचामृत बनाया कि सारे शत्रु बिना मारे घंटा पर के गरुड़ हो गए। फिर अंत में भिन्नता गई। इसने ऐसा सबको काई की फाड़ा कि भाषा, धर्म, चाल, व्यवहार, खाना-पीना सब एक-एक योजन पर अलग-अलग कर दिया।

(ख) आप धर्म के नियामक हैं जिन स्त्रियों को धर्म-बन्धन में बांधकर, उनकी सम्मति के बिना आप उनका सब अधिकार छीन लेते हैं, तब क्या धर्म के पास कोई प्रतिकार - कोई संरक्षण नहीं रख छोड़ते, जिससे वे स्त्रियाँ अपनी आपत्ति में अवलंब माँग सकें ? क्या भविष्य के सहयोग की कोई कल्पना से उन्हें आप संतुष्ट रहने की आज्ञा देकर विश्राम ले लेते हैं?

अथवा

प्रश्न स्वयं किसी के सामने नहीं आते। मैं तो समझती हूँ, मनुष्य उन्हें जीवन के लिए उपयोगी समझता है। मकड़ी की तरह लटकने के लिए अपने-आप ही जाला बुनता है। जीवन का प्राथमिक प्रसन्न उल्लास मनुष्य के भविष्य में मंगल और सौभाग्य को आमंत्रित करता है। उससे उदासीन न होना चाहिए महाराज।

(ग) आप लोगों ने बकरी को देवी माना। बाढ़ में सारा गाँव बह जाने दिया पर आसरम को नहीं डूबने दिया। गाँव की जमीन खोद-खोदकर आसरम

की जमीन ऊँची करते रहे। सूखा पड़ा, खुद भूखे रहे, घर का अनाज आसरम को दे आए। आसरम में दावतें उड़तीं रहीं, खुद भूखों मरते रहे। फिर उन्हीं लूटेरों को कन्धों पर बिठाकर देश की बागडोर थमा आए। अब भी कुछ समझे आप लोग ?

अथवा

शादी को ही लीजिए। आप मानते हैं कि हरेक आदमी को जाति की जिंदगी में दाखिल होना जरुरी है। जैसा मैं प्राय: कहता हूँ कि दुनिया साझे की दुकान है और हर एक बालिग़ आदमी का कर्त्तव्य है कि उसका उत्तेजित होकर साझेदार हो। अगर इस कोशिश में आप जान नहीं खपा देते, तो आप मनुष्य कहलाने का कोई हक़ नहीं रखते। मैं कहता हूँ, सब पुस्तकें गलत हैं, सब झूठी हैं।

2. 'भारत-दुर्दशा' नाटक में चित्रित समस्याओं का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

'भारत-दुर्दशा' एक प्रतीक नाटक है – उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' का प्रतिपाद्य स्पष्ट करते हुए, इसकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

'ध्रुवस्वामिनी' नाटक के आधार पर ध्रुवस्वामिनी की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कीजिए।

4. 'बकरी नाटक स्वार्थी नेताओं द्वारा आम जनता के शोषण की गाथा है' - इस कथन की समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'बकरी' नाटक सामयिक संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कृति सिद्ध होती है - सोदाहरण विवेचन कीजिए।

5. 'दीपदान' एकांकी की तात्त्विक समीक्षा कीजिए। (12)

अथवा

'स्ट्राईक' एकांकी की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।